गुजरात में बाँगडा (मलबारी) का अवतरण

सत्तर के दशक के आखिरी समय में भारतीय मैकरल *रास्ट्रेलिगर कानागुर्टा* अधिकतर पश्चिम तट, जो कि रत्नागिरी से दक्षिण केरल तक है, पर पाई जाती थी। कभी कभी कुछ मैकरल कारवार के उत्तर में भी पाई गई। 1978 तक यह गुजरात के तट पर नहीं के बराबर थी। (नोबल ए 1979)

अस्सी के दशक के आरंभ में मैकरल गुजरात के कई अवतरण केन्द्रों पर पाई जाने लगी तथा धीरे-धीरे इसका अवतरण बढ़ने लगा। बाद में यह देखने में आया कि *आर. कानागुर्टा* का अवतरण गुजरात तट पर अच्छी मात्रा में ट्रॉल तथा गिल जाल द्वारा हो रहा है।

मैकरल का अवतरण ट्रॉल एककों द्वारा पोरबंदर, मांगरोल, भीडिया, और पुराना लाईट हाउस वेरावल और वनकबारा में लगातार रिकार्ड् किया गया है। इसी प्रकार का निरिक्षण गिल एककों पर वेरावल, जालेश्वर, सुत्रपाडा, चोरवाड, मांगरोल, वनकबारा, माघवाड, घोघला, पोरबंदर, मियानी सील तथा गुजरात के अन्य गिल जाल केन्द्रों पर भी किया गया।

वेरावल के मछली अवतरण का विशेष निरीक्षण किया गया। मार्च-मई 1997 के नमूनों का जैविक अध्ययन किया गया।

मार्च-अप्रैल के दौरान वेरावल और मांगरेल में मैकरल का असामान्य अवतरण देखने में आया। अप्रैल के आखिरी सप्ताह में पकड़ सबसे ज्यादा 200 कि.ग्रा से अधिक थी। कुछ एक दिन के दौरे वाली नावों ने एक दिन में एक टन से अधिक मैकरल मछली का अवतरण किया। ट्राल एकक में पकड़ कुछ कम हुई तथा बडा गिल एकक जो कि कम समुद्री पानी में मई, जून और जुलाई में प्रचालित की गई उनमें पकड़ की मात्रा बढी। मई के अंत में ट्रॉल पूरी तरह मानसून के कारण बंद कर दिया गया। मानसून के कारण तट की ओर मछली झुण्ड की गतिविधियाँ बढ गई।

शुरुआत में मैकरल मछली की खपत घरेलू बाज़ार में कम थी कुछ समय के बाद थोड़ी बढी तथा बाद में एक मैकरल मछली 3-5 रु. में मिलने लगी। खपत के आधार (दक्षिण भारतीयों द्वारा) तथा मलाबार तट में अधिक पाए जाने के कारण इसको "मलाबारी बांगड़ी" भी कहा जाता है।

जैविक अध्ययन

पकड़ में बडे आकार की मछलियाँ थी जिनकी लंबाई 221 मि मी से 270 तक थी, मुख्य आकार वर्ग 242.5, 247.5 और 237.5 मि मी था। प्रथम वर्ग श्रेणी से संबंधित मछलियों में मादा की प्रमुखता थी (55.6%)। 40% मादा परिपक्व से पहले की अवस्था में (तीसरी स्थिति) तथा अधिकतर परिपक्व और पूर्ण विकसित अवस्था (चौथी व पांचवी) में थी। पूर्ण विकसित प्रजनन की अवधि में मछलियों की आंत्र खाली होती है तथा बाकी (35%) की आंत्र भरी होती है। साधारणतया मछली पूरे तटीय क्षेत्र में 25 मी. की गहराई तक पकड़ी जाती है। मैकरल मछली अधिकतर बड़े स्तर पर एक साथ इधर से उधर तट के समीप व दूर पानी में गतिशील रहती है। यह झुण्ड में रहने वाली मछली है तथा अपनी गतिविधि के दौरान अधिक

पत्रव्यवहार

मनोजकुमार बी, जो के. किषकूडन, सुजिता तोमस, दिनेश बाबू ए.पी., सावरिया वै.डी., थोकिया एल.के., तुंबेर बी.पी., जाला एम.एस.

सी एम एफ आर आई वेरावल क्षेत्रीय केंद्र, गुजरात

संख्या में पूरे क्षेत्र में फैल जाती है तथा एक ही दिशा की ओर तैरती रहती है। मछली के एक साथ एक ही दिशा में गतिसील होने से, ट्राल और गिल जाल के स्थान पर यदि नई तकनीक का जाल विकसित किया जाए, जिसकी मदद से एक साथ पकड में आ जाए, तो वाणिज्यक मत्स्यन में इसका विकास साध्य हो जायेगा।

मुख्य शब्द/Keywords

मैकरल - mackeral /बाँगडा/मलबारी
गिलनेट - gillnet / क्लोम जाल
ट्राल नेट - trawl net /आनाय जाल

उपजाऊ वेलापवर्तियाँ

बोनिटो सारडा ओरियेंटालिस

वेलापवर्ती मछलियाँ अपनी उपजाऊपन केलिए मशहूर है इसलिए किसी एक वर्ष या वर्षों में इसकी कमी होने पर भी आगामी वर्षों में फूटकर उमड जाना इनका विशिष्ट लक्षण है। उदाहरण के रूप में लीजिए अति स्वादिष्ट सुरमई मछली *सारडा ऑरियेंटालिस* की बात। भारत में वर्ष 2009 के दौरान इसकी पकड 1,115 टन थी तो 2010 में घटकर 39 टन हो गया; याने कि 96.5% घटती। इस मछली की जनन क्षमता 4,04,000/ कि ग्रा. शरीर भार आकलित की है। आशा करेंगे आगामी वर्ष में यह फिर से फूट निकल जायेगी।